This question paper contains **3** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **1457**

Unique Paper Code : **210102** **D**

Name of the Paper : **Elements of Indian Philosophy–I**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Philosophy**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

Note : — Answers may be written *either* in English *or* in Hindi; but the same medium should be used throughout the paper.

टिप्पणी :— इस प्रश्न पत्र का उत्तर अंग्रेजी **या** हिंदी में से किसी एक भाषा में दीजिए परन्तु सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।

Attempt any *five* questions.

All questions carry equal marks.

किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. Expound the common concerns of Indian Philosophical schools and their relevance in the contemporary situation.

   भारतीय दार्शनिक सम्प्रदाओं की सामान्य धारणाओं को स्पष्ट करते हुए समकालीन संदर्भ में इनकी प्रासंगिकता निरूपित कीजिए।

P.T.O.

2. Explain and examine the philosophy of the Cārvāka school.

चार्वाक दर्शन की समीक्षात्मक व्याख्या कीजिए।

3. Explain the doctrine of Momentariness in Buddhism. How is the theory of no-soul related to it ? Discuss.

बौद्ध दर्शन के क्षणिकवाद की व्याख्या कीजिए। अनात्मवाद से यह कैसे संबंधित है ? चर्चा कीजिए।

4. Discuss the doctrine of liberation in Jainism.

जैन दर्शन में मोक्षविषयक सिद्धान्त का निरूपण कीजिए।

5. Examine the doctrine of anumāna in Nyāya philosophy.

न्याय दर्शन के अनुमानविषयक सिद्धान्त की परीक्षा कीजिए।

6. State and explain the category of abhāva in Vaiseṣika philosophy.

वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित अभाव की व्याख्या कीजिए।

7. Discuss the Sāṁkhya theory of evolution.

सांख्य दर्शन के विकासवाद का विवेचन कीजिए।

8. Discuss the aṣṭāṅga yoga of Yoga Philosophy.

योग दर्शन द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग की व्याख्या कीजिए।

9. Write short notes on any *two* :

किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(*i*) Four Noble Truths

चार आर्य सत्य

(*ii*) Perception in Nyāya

न्याय की प्रत्यक्षविषयक अवधारणा

(*iii*) Anekāntavāda

अनेकान्तवाद

(*iv*) Proofs for Prakṛti

प्रकृति के पक्ष में प्रस्तावित तर्क